Daily Gospel Reflections in Hindi

09 July 2019

मत्ती 11:1-6

BLESSED ARE THOSE WHO ARE NOT SCANDALISED IN CHRIST

''क्या आप वहीं है, जो आने वाले है?'' – योहन बप्तिस्ता एक शक्तिशाली नबी की तरह यहूदियों के बीच प्रकट हुए। ईश्वर– प्रदत्त उत्तर्दायित्व को निभाने के पश्चात वे राजा हेरोद द्वारा बंदी बनाया गया। उनके पद चिह्नों पर चलकर प्रभु येसु आये जिसके बारे में योहन ने कहा– देखिए ईश्वर का मेमना जो संसार का पाप हरता है (Jn. 1:29)।

आज के सुसमाचार में योहन के सवाल यह दर्शाता है कि नबी भी इंसान होते है, उनके मन में भी संदेह की छाया पड़ सकती है। जवाब में प्रभु की घोषणा और संत लूकस में प्रभु द्वारा अपने मिशन के एलान में काफी समानताएं है। दोनों संदर्भ में प्रभु लगभग एक ही बात को दुहराते है। प्रभु का उल्लेख नबी इसायियाह की तरफ है। नबी इसायियाह ने सदियों पहले भविष्यवाणी की थी कि ईश्वर अपनी प्रजा को हमेशा के लिए नहीं छोड़ेंगे। यहूदियों को बचाने के लिए एक दूत आएगा। और जब वह आएगा, अंधों की दृष्टि, बहरों के कान, लंगड़े छलांग भरना और गूंगें की जीभ आदि प्राप्त होना उस समय की निशानी होगी (Is. 35:5) ईश्वर अपने दूत द्वारा एक ऐसा समय का उद्घाटन करना चाहते है जब बंदी मुक्त किये जाएंगे और हर प्रकार की गुलामी समाप्त किये जाएंगे (Is. 58:6) और सबसे अहं बात जो प्रभु ने कहा था– दरिद्रों को सुसमाचार सुनाना (Lk. 4:18)। नबी इसायाह ने भी यही सोचा था कि मसीह अन्य राजाओं से बदला लेंगे (Is. 61:1) लेकिन मसीह का लक्ष्य था– जयंती वर्ष जैसे (Lev. 25:10) प्रभु के अनुग्रह का वर्ष घोषित करें (Lk. 4:19)। लेकिन वह वर्ष 365 का नहीं, अनन्त काल तक का रहेगा (Lk. 1:33)। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने स्वार्थ मतलबों के लिए प्रभु के संदेश का तोड़–मरोड़ न करें। अपनी निजी Planing के अनुसार प्रभु से हस्तक्षेप करने की अपेक्षा न रखें। का विधान है। बशर्ते कि हम उनसे जुड़े रहें, उनके बताये मार्ग पर चलते रहें।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019